



जुलाई, 2017



اِنَّ الْمُسْلِمِينَ مَصْبَاغُ الْهُدٰی وَ سَخِیْنَةُ النَّبَاةِ



مصباح الہدی



سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے ممبر بنئے

رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

سالانہ: ۲۰۰ روپیہ

قیمت فی شمارہ: ۲۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جو راسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی



نई नस्ल
खास तौर पर
जवानों के लिए
हुदा मिशन की
हिन्दी ज़बान में
खास पेशकश



दोमाही मिस्वाहुल हुदा

दोमाही “मिस्वाहुल हुदा” (हिन्दी) आज ही मेम्बर बनिये और साथियों को भी बनाईये।

प्रति मैगज़ीन: 40/रुपये

सालाना: 200/रुपये

रजिस्टर्ड डाक से: 300/रुपये

मुख्य संपादक: मंज़र सादिक जैदी | संपादक: तसदीक हुसैन रिज़वी

सहायक: कुमैल असगर जैदी, अली अमीर रिज़वी

Huda Mission

Office : Shafaat Market
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

हुदी مشن

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



اَلْسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاۢبٍ
(عدد ۳۹)



जुलाई, 2017 जिल्द-7, शुमारा-8

यादगार:

मौलाना मोहम्मद अली आसिफ ताबा सराह

एडिटोरियल बोर्ड:

मौलाना तसदीक हुसैन साहब, मौलाना सईदुल हसन साहब

मौलाना कुमैल असगर साहब

एडिटर:

सय्यद मंजर सादिक जैदी

सब एडिटर:

सय्यद मो0 सिब्लैन बाकरी

आर्ट एवं डिजाईन:

imagine

We Fix Imagination

9839099435

Annual Subscription
only Rs. 300/-

Published by:

Huda Mission

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA
Mob.: 9415090034, 9451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

फेहरिस्त

1. जन्नत की खिड़की
2. कुआनी क्वीज
3. बयालीसवां सबक
4. बेहतरीन दर्स
5. हज़रत फ़ातिमा मासूमा स0
6. लालच की सज़ा
7. सदका
8. जन्नत में दरख्त





جنت کی کھڑکی

جنت کی کھڑکی

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں:

ہجرت امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں:

مَنْ دَعَا لِعَشْرَةٍ مِنْ إِخْوَانِهِ الْمَوْتَى لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ أَوْ جَبَّ اللَّهُ لَهُ الْجَنَّةَ.

جو شخص شب جمعہ اپنے دس مردہ مومن بھائیوں کے لئے دعا کرے گا تو اس کے اوپر اللہ جنت واجب کر دے گا۔

جو شخص شب جمعہ اپنے دس مردہ مومن بھائیوں کے لئے دعا کرے گا تو اس کے اوپر اللہ جنت واجب کر دے گا۔

لَا يَبْقَى أَحَدٌ مِمَّنْ أَعَانَ مُؤْمِنًا مِنْ أَوْلِيَانَا بِكَلِمَةٍ إِلَّا أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ

قیامت کے دن خداوند متعال ہر اس شخص کو بغیر حساب و کتاب جنت میں داخل کرے گا جس نے ہماری محبت رکھنے والے مومنین کی تھوڑی سی بھی مدد کی ہوگی۔

قیامت کے دن خداوند متعال ہر اس شخص کو بغیر حساب و کتاب جنت میں داخل کرے گا جس نے ہماری محبت رکھنے والے مومنین کی تھوڑی سی بھی مدد کی ہوگی۔

إِحْتَمِلِ الْيَوْمَ فِي الدُّنْيَا مَا تَرْجُو بِهِ الْفَوْزَ فِي الْآخِرَةِ

آج اس دنیا میں ایسا عمل انجام دو جس کے ذریعے آخرت میں نجات کی امید پیدا کر سکو۔

آج اس دنیا میں ایسا عمل انجام دو جس کے ذریعے آخرت میں نجات کی امید پیدا کر سکو۔

إِنْ يَسْلَمْ النَّاسُ مِنْ ثَلَاثَةِ أَشْيَاءَ كَانَتْ سَلَامَةً شَامِلَةً: لِسَانِ السُّوِّ وَبِدِ السُّوِّ وَفَعْلِ السُّوِّ

اگر لوگ ان تین چیزوں سے پرہیز کریں تو ان کی زندگی ہر بلا سے محفوظ ہو جائے گی: بری زبان، برا ہاتھ اور برا کام۔

اگر لوگ ان تین چیزوں سے پرہیز کریں تو ان کی زندگی ہر بلا سے محفوظ ہو جائے گی: بری زبان، برا ہاتھ اور برا کام۔

ثَلَاثَةٌ تَدُلُّ عَلَى كَرَمِ الْمَرْءِ: حُسْنُ الْخُلُقِ، وَكُظْمُ الْغَيْظِ وَغَضُّ الْكَرْفِ

تین چیزیں ایسی ہیں جو انسان کو کریم اور بزرگوار بنا دیتی ہیں: خوش اخلاقی، غصے پر قابو پانا اور آنکھوں کو حرام سے بچانا۔

تین چیزیں ایسی ہیں جو انسان کو کریم اور بزرگوار بنا دیتی ہیں: خوش اخلاقی، غصے پر قابو پانا اور آنکھوں کو حرام سے بچانا۔

الْجَنَّةُ فِي ثَلَاثَ: تُمْسِكُ عَلَيْكَ لِسَانَكَ، وَيَسْعَاكَ بَيْتُكَ وَتَنْدُمُ عَلَى خَطِيئَتِكَ

انسان کی نجات تین چیزوں میں ہے: اپنی زبان کو لگام دینے، گھر کی دیکھ بھال کرنے اور اپنی غلطی پر شرمندہ ہونے میں۔

انسان کی نجات تین چیزوں میں ہے: اپنی زبان کو لگام دینے، گھر کی دیکھ بھال کرنے اور اپنی غلطی پر شرمندہ ہونے میں۔





प्यारे बच्चो!

हमने आपके लिए दिलचस्प सिलसिला शुरू किया है। इस QUIZ को खुद हल करने की कोशिश करें। इस क्वीज़ को हल करने से जहाँ तुम्हारी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा वहीं कुआन की तिलावत का सवाब भी मिलेगा। अपने जवाबत “तूबा” के दफ़्तर रवाना करें। आप अपने जवाब ई-मेल व SMS के ज़रिये भी भेज सकते हैं। सही जवाब देने वालों को इनाम दिया जाएगा।

SMS On

09415090034, 09890500072, 09451084885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

1. खुदा ने किस सूरे में चक्कर खाने वाले आसमान की कसम खायी है ?
☐ (1) सूरे इख़्लास ☐ (2) सूरे तीन
☐ (3) सूरे तारिक ☐ (4) सूरे ज़िलज़ाल
2. सूरे तारिक में अल्लाह ने “तारिक” किस चीज़ को कहा है ?
☐ (1) रौशनी ☐ (2) बहुत से सितारों को
☐ (3) चमकते हुए सितारों को ☐ (4) चमकते हुए चाँद को
3. “तो इस दिन खुदा वन्द ऐसा अज़ाब करेगा जो किसी ने न किया होगा” किस सूरे की कौनसी आयत है?
☐ (1) सूरे फ़जर पच्चीसवीं आयत ☐ (2) सूरे आला पहली आयत
☐ (3) सूरे मसद दुसरी आयत ☐ (4) सूरे इख़्लास पहली आयत
4. सूरे “अलक” कुआन का कौन सा सूरा है?
☐ (1) 95 ☐ (2) 110 ☐ (3) 96 ☐ (4) 102
5. “क्या तुम जहन्नम को ज़रूर देखोगे” किस सूरे की किस नम्बर की आयत है?
☐ (1) सूरे तकासुर, 6 ☐ (2) सूरे लैल, 7
☐ (3) सूरे हमज़ा, 8 ☐ (4) सूरे कुरैश, 4
6. कुआन के किस सूरे में “हाथी वालों” का ज़िक्र है? कि जिन्होंने काबे पर हमला किया।
☐ (1) सूरे ज़िल्ज़ाद ☐ (2) सूरे लैल ☐ (3) सूरे फ़लक ☐ (4) सूरे कद्र
7. किस सूरे की आखिरी आयत में लफ़्ज़े “हक़ और सब्र” का ज़िक्र हुआ है ?
☐ (1) सूरे तारिक ☐ (2) सूरे तीन
☐ (3) सूरे अस्र ☐ (4) सूरे मसद
8. “जिस ने क़लम के ज़रिये तालिम दी है” किस सूरे की कौन सी आयत है ?
☐ (1) सूरे का़रेआ, 6 ☐ (2) सूरे आला, 6
☐ (3) सूरे मसद, 2 ☐ (4) सूरे अलक, 4



सामने वाली तस्वीर को देखकर रंग भरो





اچھائی اور برائی لکھنے والے فرشتے

अच्छाई और बुराई लिखने वाले फ़रीशते

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ - كِرَامًا كَاتِبِينَ -
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ -

انفطار: ۱۰، ۱۱، ۱۲

इनफितार: 10, 11, 12



اور یقیناً تمہارے سروں پر نگہبان مقرر ہیں۔ جو باعزت لکھنے والے ہیں۔
وہ تمہارے اعمال کو خوب جانتے ہیں۔

और यकीनन तुम्हारे सरों पर निगेहबान मुकरर है।
जो बइज़त लिखने वाले हैं। वो तुम्हारे आमाल को खुब जानते हैं।





बेहतरीन दर्स

एक दिन ज़करिया नाम का एक नौजवान मदीने आया। वह शहर के गली-कूचे में इमाम जाफ़र सादिक अ० के घर का पता पूछता हुआ इमाम अ० के घर पहुँचा। ज़करिया ने दरवाज़ा खटखटाया। कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला और वह अन्दर चला गया। इमाम सादिक अ० एक कमरे में बैठे हुए थे। वह मेहमान को आते हुए देख कर अपनी जगह से खड़े हो गए और सहन तक आकर मेहमान का इस्तेक़बाल किया। इमाम अ० ज़करिया को देखते ही समझ गए थे कि वह एक

मुसाफ़िर है और बहुत दूर से आया है। इमाम अ० ने उसे सलाम किया और मेहमान ख़ाने में ले गए।

ज़करिया इमाम अ० के साथ मेहमान ख़ाने में दाख़िल हो गया तो इमाम अ० ने उसे एक मुनासिब जगह पर बैठने का इशारा किया और इसके बाद खुद भी बैठ गए। ज़करिया ने कहना शुरू किया:

“ऐ फ़रज़न्दे रसूल! मैं अभी कुछ महीने पहले ईसाई था लेकिन अब मुसलमान हो चुका हूँ और हज करने के लिए जा रहा हूँ। रास्ते में आप अ० से

मुलाकात के लिए मदीने चला आया।”

यह सुन कर इमाम अ० बहुत खुश हुए और कुछ देर बात करने के बाद ज़करिया से फ़रमाया कि अगर मेरे लायक कोई काम है तो बताओ।

“मेरे रिश्तेदार ईसाई हैं यहाँ तक कि मेरे माँ बाप भी। मेरी माँ बूढ़ी भी है और नाबीना भी।” ज़करिया ने बताना शुरू किया “मैं अपने वालिदैन के साथ रहता हूँ और उन्हीं के साथ खाता—पीता हूँ। अब आप बताएं मुझे क्या करना चाहिए?”

इमाम अ० ने ज़करिया से पूछा कि “तुम्हारे माँ—बाप क्या खाते हैं?”

“आम लोगों की तरह गोश्त, रोटी और इसी तरह की दूसरी चीज़ें।” ज़करिया ने अदब से जवाब दिया।

इमाम जाफ़र सादिक अ० ने फ़रमाया: “उनके साथ ज़िन्दगी गुज़ारने में कोई हर्ज नहीं है। कोशिश करो कि अपने माँ—बाप के साथ अच्छी तरह पेश आओ। जब तक ज़िन्दा हैं उनका ख़याल रखो। पहले से भी ज़्यादा।”

ज़करिया ने इमाम अ० का शुक्रिया अदा किया और हज करने के लिए रवाना हो गया। हज अंजाम देने के बाद वह अपने वालिदैन के पास अपने घर चला गया। वह इमाम अ० के हुक्म के मुताबिक अपने वालिदैन के साथ बहुत मुहब्बत से पेश आता और तमाम कामों में उनकी मदद करता। इसी तरह कुछ दिन गुज़र गए। एक दिन ज़करिया की माँ ने तअज्जुब के साथ उससे पूछा: “बेटा! इन दिनों तुम मुझसे ज़्यादा ही मुहब्बत करने लगे हो।

तुम्हारा बर्ताव मेरे साथ कितना अच्छा हो गया है! क्या कोई ख़ास बात हो गई है?”

“हाँ माँ!” ज़करिया ने जवाब दिया। “मैं हज करने के लिए गया तो रास्ते में मदीना भी गया था। वहाँ पैग़म्बरे इस्लाम स०व० के एक बेटे रहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि आप के साथ और बाबा के साथ पहले से भी ज़्यादा अच्छा सुलूक करुं और आपका ज़्यादा ख़याल रखूं।”

यह सुन कर बूढ़ी औरत की आँखों में आँसू आ गए और बोली: “बेटा! तुमने कितना अच्छा दीन चुना है! जिस दीन के पैग़म्बर स०व० का बेटा ऐसी बातें कहे, यकीनन उसके पैग़म्बर स०व० की बातें भी हिदायत देने वाली होंगी। मुझे भी अपने दीन के बारे में बताओ।”

ज़करिया अपनी माँ के पास बैठ गया और उसे इस्लाम और उसके अहकाम के बारे में जो कुछ वह खुद जानता था, बताने लगा। ज़करिया की बातें सुन कर उसकी माँ का चेहरा खिलता जा रहा था। जब ज़करिया ख़ामोश हुआ तो उसकी बूढ़ी माँ बोली: “यह कितना अच्छा दीन है! मैं भी मुसलमान होना चाहती हूँ।”

इसके बाद वह मुसलमान हो गई और इस्लामी अख़लाक, किरदार और अफ़कार के बारे में मालूमात हासिल किया और जिस हद तक हो सका इस्लाम के अहकाम पर अमल करने लगी।

ज़करिया बहुत खुश था कि उसकी बूढ़ी माँ भी अब मुसलमान हो चुकी थी और वह भी खुदा और उसके रसूल स०व० के हुक्म पर अमल करने लगी थी।





हज़रत फ़ातिमा मासूमा स०

प्यारे बच्चों! आज हम आपको मासूम-ए-कुम के बारे में बताते हैं। हज़रत मासूमा स० हज़रत रसूलुल्लाह स०व० के बेटे इमाम मूसा काज़िम अ० की बेटी और हज़रत इमाम अली रज़ा अ० की बहने हैं। आपका असली नाम फ़ातिमा है और आप मासूम-ए-कुम के नाम से मशहूर हैं।

हज़रत फ़ातिमा मासूम: पहली ज़िकाद 173 हि० को मदीने में पैदा हुई और रबीउस्सानी की 10 तारीख 201 हि० को वफ़ात पा गई।

हज़रत फ़ातिमा मासूम: स० रसूलुल्लाह स०व० के अहलेबैत की उन हस्तियों में से हैं जो एक अज़ीम शख़्सियत की मालिक थीं जैसे हज़रत ज़ैनबे कुबरा स० और हज़रत अबुल फज़िल अब्बास अ०।

आपकी अज़मत और फज़ीलत का अन्दाज़ा इससे लगा सकते हैं कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक ने आपके वालिद हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ० की विलादत से पहले ही आपकी ज़ियारत की फज़ीलत बयान फ़रमाई थी।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अ० ने अपने एक सहाबी से हज़रत इमाम मूसा अ० इब्ने जाफ़र अ० की तरफ़ बचपन में इशारा करते हुए फ़रमाया कि यह मेरा बेटा मूसा है, खुदा इससे मुझे एक बेटी अता करेगा जिसका नाम फ़ातिमा होगा। वह कुम की ज़मीन में दफ़न हो जाएगी और जिसने कुम में उसकी ज़ियारत की उस पर जन्नत वाजिब होगी।

एक और रवायत में है कि आपने



फरमाया कि बहुत जल्द कुम में मेरी औलाद में से एक ख़ातून दफ़न होगी जिसका नाम फ़ातिमा है और जो उसकी क़ब्र की ज़ियारत करेगा उस पर जन्नत वाजिब होगी। इस तरह की हदीस और रवायत हज़रत मासूमा स० के अज़ीम मरतबे का बेहतरीन सबूत है।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की जुबान से हज़रत मासूमा स० की ज़ियारत करने वालों के लिए जन्नत की ख़बर और वह भी वाजिब होने की हद तक बड़ी अहमियत की बात है।

हज़रत इमाम रज़ा अ० को छोड़ कर, हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ० की औलाद में हज़रत मासूमा ही वह हस्ती हैं जिनकी फ़ज़ीलत के बारे में आइम्माए मासूमीन अ० की रवायात मिलती हैं।

आइये आपको हज़रत मासूमा स० के इल्मी मक़ाम से तअल्लुक़ रखने वाला एक वाक़िआ सुनाते हैं। एक दिन अहलेबैत की शीओं का एक गिरोह हज़रत इमाम मूसा

काज़िम अ० से कुछ इल्मी सवाल के जवाब हासिल करने के लिए मदीने पहुँचा। उस वक़्त इमाम अ० सफ़र पर थे इसलिए इस गिरोह के लोगों ने अपने सवाल लिख कर आपके घर पर दिए और यह कह गए कि लौट कर जवाब ले लेंगे। वह लोग वापिस जाते वक़्त हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ० के घर गए तो देखा कि हज़रत मासूमा स० ने उन सारे सवालों के जवाब लिख दिए थे, जबकि इस वक़्त आप कमसिन थीं, वह लोग अपने सवालों के जवाब पाकर बहुत खुश हुए और अपने वतन वापिस चल पड़े।

रास्ते में हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ० से मुलाक़ात हुई तो पूरा वाक़िआ आपको सुनाया, इमाम ने उनसे वह जवाब माँगें, जब आपने देखा कि हज़रत मासूमा स० ने सारे सवालों के जवाब सही लिखे हैं तो आपने फ़रमाया कि "उसका बाप उस पर कुर्बान हो"।

यह वाक़िआ हज़रत मासूमा स० की इल्मी मंज़िलत की एक वाज़ेह दलील है।



लालच की सज़ा

बच्चों एक चींटी थी उसका रंग भूरा था बाकी सियाह चींटियों से बिलकुल अलग थी जिसकी वजह से उसकी सहेलियाँ उसे भीनी कहती थीं भीनी को अपनी सहेलियों के बरअक्स क़तार में चलना बिलकुल पसन्द नहीं था जब भी उसकी साथी चींटियाँ एक लम्बी सीधी क़तार में चल रही होती भीनी कभी दाएं चलने लगती कभी बाएं और कभी तो रुक कर किचन से आती हुई मज़ेदार खानों की खुशबूओं का मज़ा लेने लगती उसका दिल करता फ़ौरन किचन में जाकर मज़े मज़े के खाने खाने लगे चींटियों की सरदार चींटी नीनी ने उसको बहुत समझाया और सख़्त सज़ा भी दी लेकिन भूरी चींटी की आदत न बदल सकी।

ख़ैर एक दिन जब जासूस चींटी जीनी ने आकर बताया कि किचन में मज़ेदार केक के कुछ टुकड़े गिरे पड़े हैं तो सरदार चींटी ने फ़ौरन प्लान सोचा फिर क्या था चींटियों के दो दस्तों को काफ़िले में बाँटा और वह अपने मिशन पर रवाना हो गये केक के टुकड़ों के पास पहुँच कर सरदार चींटी नीनी ने बताया कि पहले दस्ते की चींटियाँ केक के नन्हे नन्हे टुकड़े करेंगी जबकि दूसरा दस्ता पलेट की

ओट में खड़ा रहेगा जब टुकड़े हो जाएं तो पहला दस्ता आकर उनको उठाएगा और घर ले जायेगा भीनी दूसरे दस्ते में शामिल थी उसका बस नहीं चलता था कि केक के मज़ेदार टुकड़े जल्दी जल्दी खा जाए लेकिन सरदार चींटी का उसूल था मिशन के दौरान सिर्फ़ काम पर ध्यान होना चाहिये।

अचानक उसकी नज़र शेल्फ के किनारे लगी हुई सफ़ेद सफ़ेद मीठी क्रीम पर पड़ी उसके मूँह में तो पानी भर आया पहले उसने इधर उधर देखा उसकी सब साथी चींटियाँ गिरोह बनाकर बातें कर रही थीं भीनी की तरफ किसी का ध्यान नहीं था भीनी ने चुपके से क़दम बढ़ाये और सफ़ेद क्रीम की जानिब रवाना हो गयी उधर जब केक के छोटे छोटे टुकड़े हो गये तो सरदार चींटी ने दूसरे दस्ते को इशारा किया दूसरा दस्ता तेज़ी से आगे बढ़ा और केक के सारे टुकड़े तमाम चींटियों ने अपनी अपनी कमर पर रख लिये।

लेकिन यह क्या जल्दी करो लगता है नौकर सफ़ाई करने आ रहा है अचानक जासूस नीनी की आवाज़ सबके कानों से टकराई उसके साथ ही सब चींटियाँ सरदार की कयादत में जल्दी जल्दी घर की जानिब रवाना



होने लगीं शेल्फ की दूसरी जानिब बिलकुल आखरी किनारे पर खड़ी हमारी भीनी चींटी कीम खाने में इतनी मसरुफ थी कि उसे नीनी की आवाज़ बिलकुल न सुनाई दी न ही बहुत देर तक उसे पता चल सका कि उसका सारा काफिला घर जा चुका है।

जब वह पेट भर मजेदार कीम खा चुकी तो अचानक नौकर ने ज़रद कपड़े से वह शेल्फ भी साफ कर डाला भीनी को समझ में नहीं आया यह क्या हुआ जब उसको होश आया तो वह ज़रद कपड़े पर चिपकी हुई थी।

यह कौन सी जंगह है यह मैं कहाँ हूँ मेरी सहेलियाँ कहाँ हैं? भीनी सोच सोच कर रोने लगी फिर उसने खुद को संभाला और दीवार का सहारा लेते हुए कपड़े से नीचे उतर आयी फिर उसने अन्दाज़े से एक तरफ सफर करना

शुरु कर दिया वह बहुत देर तक रास्ता तलाश करती रही अब तो थकावट और भूक से उसका बुरा हाल हो चुका था। कुछ देर बाद दाएं जानिब से उसे केक की खुशबू आने लगी यह खुशबू सरदार चींटी के गोदाम से आ रही थी भीनी उसी सिम्त चलने लगी घर पहुँच कर उसने सबसे पहले सरदार चींटी से माफी मांगी जो बहुत गुस्से में थी लेकिन उसकी ग़ैर मौजूदगी से बेहद परेशान भी थी।

मेरे प्यारे बच्चों उस दिन हमारी भूरी चींटी भीनी को अच्छी तरह मालूम हो गया था कि लालच बहुत बुरी बला है अब वह हमें साधी साधी कतार में चलती रहती और चाहे बन्द मक्खन हों या शकर के सफेद चमकदार ज़र्रे वह कभी अपनी सहेलियों से अलग होकर कोई चीज़ खाने की कोशिश नहीं करती।



हुदा मिशन

मेम्बर शिप फार्म

तूबा (माहनामा) 300/-

मिस्बाहुल हुदा (हिन्दी) 200/-

मिस्बाहुल हुदा (उर्दू) 200/-

Name: Mr./Mrs./Miss

Father/Husband's Name:

Address:

City/Vill.: Post :

Distt.: State:

Pin: Mobile No:

Phone e-mail:

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: Date Signature.....

हुदा मिशन, शिफाअत मार्केट, ज़हरा कालोनी, मुफ्तीगंज, लखनऊ-3 (इण्डिया)

फोन : 9415090034, 9451085885, 9335881838, 8726254727

इस आर्डर फार्म की कॉपी भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें।





सदका

जब्बाद स्कूल से घर आया तो काफी उदास लग रहा था। उसने अम्मी को सलाम किया, जूते मख्सूस जगह उतार कर अपना बैग अलमारी में रखा और मुँह हाथ धोने चला गया।

“क्या हुआ जब्बाद? आज तुम कुछ उदास से लग रहे हो?” जवाब मुँह हाथ धोकर आया तो अम्मी ने पूछा।

“अम्मी, आज अबूज़र स्कूल नहीं आया था। हम सब दोस्त उसको बहुत याद कर रहे थे।” जवाब ने बताया।

“तो इसमें परेशानी की क्या बात है?” अम्मी ने पूछा। वह जानती थीं कि अबूज़र के साथ जवाब की बहुत अच्छी दोस्ती है।

“अस्ल में उसके वालिद बहुत सख़्त बीमार हैं।” जवाब ने बताया।

“तुम उसके सच्चे दोस्त हो, इसलिए तुम

उनके लिए ज़रूर दुआ करना।” अम्मी ने जवाब से कहा।

“लेकिन अम्मी, अस्ल मसला यह है कि वह लोग बहुत ग़रीब हैं। वह अपने अबू का इलाज कैसे करावेंगे?” जवाब ने परेशानी से कहा।

“तो क्या हुआ, तुम अपने स्कूल के दोस्तों के साथ मिलकर उनकी मदद कर दो।” अम्मी ने राय दी।

“लेकिन अम्मी वह बहुत खुददार इंसान है। हम लोगों ने पिछले साल उसकी मदद करना चाही थी। लेकिन उसने साफ़ इन्कार कर दिया था और कहा था कि मैं सदका नहीं ले सकता।” जवाब ने अम्मी को बताया।

“अच्छा तुम स्कूल से नमाज़ पढ़ कर आए हो, अभी खाना खा कर सो जाओ, शाम को उसे फ़ोन करके बुला लेना, फिर हम कुछ करेंगे। अभी

मैं नमाज़ पढ़ने जा रही हूँ।” अम्मी ने खाना निकाल कर जवाद के सामने रखा और खुद नमाज़ पढ़ने चली गई।

शाम को जवाद ने अबूज़र के अलावा अपने दूसरे दोस्तों को भी बुला लिया। जब सब लोग जमा हो गए तो अम्मी ने चाय बनाई और ड्राइंग रूम में चली गई। सब बच्चों ने उठ कर जवाद की अम्मी को सलाम किया। अम्मी ने सबके सलाम का जवाब दिया और फिर जवाद से कहा कि सबको चाय के कप दे दो। उसके बाद उन्होंने सोफे पर बैठ कर अबूज़र से उसके अबू की तबियत के बारे में पूछा तो अबूज़र ने कहा कि “बस ख़ाला, आहिस्ता-आहिस्ता ठीक हो जाएगी।”

“देखो अबूज़र, मुझे मालूम हुआ है कि तुमने अपने दोस्तों की मदद की पेशकश को ठुकरा दिया है।”

“ख़ाला, यह सब मेरे दोस्त हैं, लेकिन हम खुददार लोग हैं और हम सदका लेना पसंद नहीं करते।” अबूज़र ने साफ़ इन्कार किया।

“देखो अबूज़र” अम्मी बोली, “क्या तुम जानते हो, सदक़े का मतलब क्या है?”

“जो रक़म भिखारियों और फ़कीरों को दी जाती है, उसी को सदका कहते हैं।” अबूज़र ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

“नहीं बेटा, सदका, सदाक़त से निकला है। क्या तुम्हें सदाक़त का मतलब मालूम है?”

“जी हाँ, सदाक़त का मतलब है सच्चाई।” अबूज़र बोला।

“और सदीक़ किसे कहते हैं? अम्मी ने नया सवाल किया।

“ख़ाला, सदीक़ दोस्त को कहते हैं।” फ़ैसल ने जवाब दिया। वह जवाद और अबूज़र का क्लास फ़ेलो था।

“जी हाँ, सच्चे दोस्त को सदीक़ कहते हैं।”

अम्मी ने ताइद की ओर फिर कहा: “देखो अबूज़र, जब कोई किसी का सच्चा दोस्त यानी सदीक़ होता है तो मुश्किल में उसके काम भी आता है। इसी तरह से वह अपनी सच्चाई यानी सदाक़त का सुबूत देता है। तुम्हारे यह दोस्त तुम्हें फ़कीर नहीं बल्कि अपना दोस्त समझते हैं, इसलिए तुम्हारी मदद करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं।” अम्मी ने प्यार से अबूज़र को समझाया।

“इस के अलावा, तुम्हें चाहिए कि अपने वालिद की शिफ़ा के लिए कोई मन्नत मान लो, जैसे हज़रत अली अ0 और बीबी फ़ातिमा स0 ने इमाम हसन अ0 और इमाम हुसैन अ0 की बीमारी से शिफ़ा के लिए तीन दिन रोज़े की मन्नत मानी थी।”

“यह ठीक है, लेकिन मैं माहे रमज़ान में नज़र के रोज़े रखूंगा या माहे रमज़ान के?” अबूज़र ने जवाद की अम्मी से पूछा।

“बेटा माहे रमज़ान में, रमज़ान के वाजिब रोज़ों के अलावा कोई रोज़ा नहीं रखा जा सकता, वरना दोनों में से कोई भी रोज़ा शुमार नहीं होगा। इसलिए तुम मन्नत मान लो, लेकिन जब अबू ठीक हो जाएंगे तो ईद के बाद अपनी मन्नत बढ़ा लेना।”

“ठीक है ख़ाला, लेकिन मैं यह पैसे बतौर कर्ज़ लूंगा और बाद में वापिस करूंगा।” अबूज़र ने कहा।

“बेटा तुम्हारा नाम अबूज़र है,” जवाद की अम्मी बोलीं, “हज़रत अबूज़र ग़फ़ारी भी बहुत खुददार इंसान थे। खुददारी अच्छी चीज़ है, लेकिन दोस्तों की दोस्ती को ठुकराना भी अच्छी बात नहीं है तुम ऐसा करना कि बाद में यह रक़म किसी और को दे देना।”

“हाँ यह ठीक है।” अबूज़र ने कहा और जवाद की अम्मी का शुक्रिया अदा करके चला गया।





जन्नत में दरख्त

एक मर्तबा अल्लाह के रसूल, हज़रत मुहम्मद स०व० ने अपने अस्हाब से फ़रमाया कि "जो शख्स सुब्हान अल्लाह कहे, अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक दरख्त उगाता है और जो शख्स अलहम्दुल्लिह कहे, अल्लाह उसके लिए भी जन्नत में एक दरख्त उगाता है और जो शख्स ला इलाहा इलल्लाह कहे, खुदा उसके लिए भी जन्नत में एक दरख्त उगाता है और जो शख्स अल्लाहो अकबर कहे तो खुदा उसके लिए भी जन्नत में एक दरख्त उगाता है।"

पैग़म्बर स०व० के अस्हाब यह सुन कर बहुत खुश हुए। वह एक दूसरे के साथ हिसाब-किताब करने लगे। ज़्यादातर सहाबी बड़े खुश थे। वह आपस में कहने लगे कि "हम लोगों ने तो अब तक कई मर्तबा

अल्लाहो अकबर, लाइलाहा इलल्लाह, सुब्हान अल्लाह और अलहम्दुल्लिह कहा हुआ है। इस तरह तो हमारे पास जन्नत में सैकड़ों या हजारों की तादाद में दरख्त होंगे।" इन्हीं में से एक सहाबी ने पैग़म्बर स०व० से पूछा कि "या रसूल्लाह! हम लोग तो अब तक बहुत ज़्यादा सुब्हान अल्लाह, अलहम्दुल्लिह, ला इलाहा इलल्लाह और अल्लाहो अकबर कह चुके हैं, लेहाज़ा अब तो जन्नत में हमारे पास बहुत सारे दरख्त होंगे।"

हुज़ूर स०व० ने फ़रमाया कि "हाँ! तुम लोगों ने अपने लिए काफी दरख्त उगाए हैं, लेकिन खयाल रखना कि अपने बुरे कामों से उन दरख्तों पर आग फेंक कर उन्हें जला न देना।"



لطیفے

باپ (حیرانی سے) عرفان تم مرغا کیوں بنے ہوئے ہو۔
بیٹا..... ابا جان! آپ ہی نے تو کہا تھا جو کام اسکول میں کرایا جاتا ہے اسے گھر پر دہرایا کرو۔

ایک چھوٹے بچے نے اپنے والد سے پوچھا "ابو؟
کیا ہم ہوائی جہاز کے ذریعہ اللہ میاں کے پاس پہنچ سکتے ہیں،" باپ نے جواب دیا "
ارے اللہ میاں کے پاس تو کار میں بیٹھ کر بھی پہنچا جاسکتا ہے۔ بشرطیکہ کار تمہاری امی ڈرائیو کر رہی ہو۔

ایک بھکاری صدالگار ہاتھ "صرف دو روپے کا سوال ہے۔ بابا۔"
ایک آدمی نے اس سے پوچھا "صرف دو روپے ہی کیوں؟" اس پر بھکاری نے بڑی معصومیت سے جواب دیا
"میں آدمی کی اوقات دیکھ کر ہی مانگتا ہوں۔"

دو، دوست بہت چالاک بن رہے تھے انہیں لاہور جانا تھا مگر ٹرین میں
تھوڑی سی بھی جگہ نہ تھی رات کے وقت انہوں نے شور مچا دیا کہ بوگی میں سانپ آیا ہے
سب مسافر خوف کے مارے ڈبے سے اتر گئے۔ دونوں دوست جلدی سے ٹرین میں
سوار ہوئے اور برتھ پر سو گئے جب ان کی آنکھ کھلی تو انہوں نے کھڑکی سے دیکھا
سامنے ایک قلی کھڑا ہے۔ انہوں نے اس سے پوچھا: بھائی صاحب! کیا لاہور آ گیا ہے؟
قلی (حیرت سے): لاہور؟ جناب! رات اس ڈبے میں سانپ گھس آیا تھا
اس لئے یہ ڈبہ ٹرین سے کاٹ دیا گیا تھا۔

مسافر (رکشے والے سے) ریلوے اسٹیشن جانے کے کتنے پیسے لوگے؟ رکشے والا بولا جی سو روپے لوں گا۔
مسافر بولا، پچاس روپے لے لو۔ بھلا پچاس روپے میں کوئی جاتا ہے رکشے والے نے کہا۔
تم پیچھے بیٹھو میں تمہیں لے کر جاتا ہوں مسافر بولا۔



Diary



مہمان کا احترام

عبداللہ بن یعفور کہتے ہیں کہ: میں نے حضرت امام صادق علیہ السلام کی خدمت میں ایک مہمان کو دیکھا، کہ جس نے کچھ کاموں کو انجام دینا چاہا تو امام علیہ السلام نے اس کو روک دیا اور خود ان کاموں کو انجام دیا اور فرمایا: پیغمبر اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے مہمان سے کام کرانے سے منع فرمایا ہے۔

نعمت کا شکر

معاویہ بن وہب کہتے ہیں: میں مدینہ میں حضرت امام صادق علیہ السلام کے ساتھ تھا، آپ اپنی سواری پر سوار تھے، اچانک سواری سے اتر گئے، ہم بازار یا بازار کے نزدیک جانے کا ارادہ رکھتے تھے، لیکن امام علیہ السلام سجدہ میں گئے اور آپ نے ایک لمبا سجدہ کیا، میں انتظار کرتا رہا یہاں تک کہ آپ نے سجدہ سے سر اٹھایا، میں نے عرض کی: میں آپ پر قربان! میں نے آپ کو دیکھا کہ سواری سے اترے اور سجدہ میں چلے گئے؟ فرمایا: میں اپنے اوپر خدا کی نعمت کو یاد کرنے لگا تھا۔

جنت کے تین دروازے

امام صادق علیہ السلام نے فرمایا: "جان لو کہ خدا کے لئے ایک حرم ہے اور وہ مکہ ہے؛ اور حضرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ کے لئے بھی ایک حرم ہے اور وہ مدینہ ہے؛ اور حضرت امیر المؤمنین علیہ السلام کے لئے بھی ایک حرم ہے اور وہ کوفہ ہے۔ تم ہمارا چھوٹا کوفہ ہے، جان لو کہ جنت کے آٹھ دروازے ہیں جن میں سے تین دروازے تم کی جانب کھلتے ہیں۔ میرے فرزندوں میں سے ایک خاتون۔ جن کا نام فاطمہ ہے۔ تم میں رحلت فرمائیں گی جن کی شفاعت سے ہمارے تمام شیعہ جنت میں داخل ہوں گے۔"

نیند پوری کریں

عمر بڑھنے کے ساتھ ساتھ ہماری نیند کی مقدار بھی بدلتی جاتی ہے۔ نوزائیدہ بچے دن میں 16 سے 18 گھنٹے سوتے ہیں۔ ایک سے تین سال کا بچہ 14 گھنٹے سوتا ہے اور تین یا چار سال کا بچہ 11 یا 12 گھنٹے سوتا ہے۔ سکول جانے والے بچوں کو کم از کم 10 گھنٹے، نوجوانوں کو تقریباً 9 یا 10 گھنٹے اور بالغوں کو 7 سے 8 گھنٹے کی نیند کی ضرورت ہوتی ہے۔ ہمیں یہ نہیں سوچنا چاہیے کہ ہم جتنے بھی گھنٹے سوئیں، اُس سے کچھ فرق نہیں پڑتا۔ ماہرین کے مطابق بھرپور نیند سونا۔۔۔ بچوں اور نوجوانوں کی نشوونما کے لیے ضروری ہے۔ نئی باتیں سیکھنے اور یاد رکھنے کے لیے ضروری ہے۔ ہارمونز کے توازن کو قائم رکھنے کے لیے ضروری ہے جو ہمارے وزن اور جسم میں خوراک کو توانائی میں تبدیل کرنے کے عمل پر گہرا اثر ڈالتے ہیں۔ دل کی صحت کے لیے ضروری ہے۔ بیماریوں سے بچنے کے لیے ضروری ہے۔ نیند کا پورا نہ ہونا موٹاپے، ڈیپریشن، دل کی بیماری، شوگر اور جان لیوا حادثوں کا باعث بنتا ہے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ بھرپور نیند سونا کتنا ضروری ہے۔



جنت میں درخت

سبحان اللہ اور الحمد للہ کہا ہے۔ اس طرح تو ہمارے پاس جنت میں سینکڑوں یا ہزاروں کی تعداد میں درخت ہوں گے۔"

انہی میں سے ایک صحابی نے پیغمبرؐ سے پوچھا کہ "یا رسول اللہ! ہم لوگ تو اب تک بہت زیادہ سبحان اللہ، الحمد للہ، لا الہ الا اللہ اور اللہ اکبر کہہ چکے ہیں، لہذا اب تو جنت میں ہمارے پاس بہت سارے درخت ہوں گے۔"

حضورؐ نے فرمایا کہ "جی ہاں! آپ لوگوں نے اپنے لئے کافی درخت اگائے ہیں، لیکن خیال رکھنا کہ اپنے برے اعمال سے ان درختوں پر آگ پھینک کر انہیں جلانہ دینا۔"

ایک مرتبہ اللہ کے رسول حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اپنے اصحاب سے فرمایا کہ "جو شخص سبحان اللہ کہے، اللہ اس کے لئے جنت میں ایک درخت اگاتا ہے اور جو شخص الحمد للہ کہے، اللہ اس کے لئے بھی جنت میں ایک درخت اگاتا ہے اور جو شخص لا الہ الا اللہ کہے، خدا اس کے لئے بھی جنت میں ایک درخت اگاتا ہے اور جو شخص اللہ اکبر کہے تو خدا اس کے لئے بھی جنت میں ایک درخت اگاتا ہے۔"

پیغمبرؐ کے اصحاب یہ سن کر بہت خوش ہوئے۔ وہ ایک دوسرے کے ساتھ حساب کتاب کرنے لگے۔ زیادہ تر صحابی بڑے خوش تھے۔ وہ آپس میں کہنے لگے کہ "ہم لوگوں نے تو اب تک کئی مرتبہ اللہ اکبر، لا الہ الا اللہ،

رکھا اور خود نماز پڑھنے چلی گئیں۔

شام کو جواد نے ابوذر کے علاوہ اپنے دوسرے دوستوں کو بھی بلا لیا۔ جب سب لوگ جمع ہو گئے تو امی نے چائے بنائی اور ڈرائنگ روم میں چلی گئیں۔ سب بچوں نے اٹھ کر جواد کی امی کو سلام کیا۔ امی نے سب کے سلام کا جواب دیا اور پھر جواد سے کہا کہ سب کو چائے کے کپ دے دو۔ اس کے بعد انہوں نے سونے پر بیٹھ کر ابوذر سے اسکے ابو کی طبیعت کے بارے میں پوچھا تو ابوذر نے کہا کہ "بس خالہ، آہستہ آہستہ ٹھیک ہو جائیں گے۔" دیکھو ابوذر، مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم نے اپنے دوستوں کی مدد کی پیشکش کو ٹھکرا دیا ہے۔"

خالہ، یہ سب میرے دوست ہیں، لیکن ہم خود دار لوگ ہیں اور ہم صدقہ لینا پسند نہیں کرتے۔" ابوذر نے صاف انکار کیا۔ دیکھو ابوذر "امی بولیں، کیا تم جانتے ہو، صدقہ کا مطلب کیا ہے؟"

جو رقم بھکاریوں اور فقیروں کو دی جاتی ہے، اسی کو صدقہ کہتے ہیں۔" ابوذر نے دھیمی آواز میں جواب دیا۔

نہیں بیٹا، صدقہ، صداقت سے نکلا ہے۔ کیا تمہیں صداقت کا مطلب معلوم ہے؟"

جی ہاں، صداقت کا مطلب ہے سچائی۔" ابوذر بولا۔

اور صدیق کسے کہتے ہیں؟ امی نے نیا سوال کیا۔

خالہ، صدیق دوست کو کہتے ہیں۔" فیصل نے جواب دیا۔ وہ جواد اور ابوذر کا کلاس فیلو تھا۔

جی ہاں، سچے دوست کو صدیق کہتے ہیں۔" امی نے تائید کی

اور پھر کہا: "دیکھو ابوذر، جب کوئی کسی کا سچا دوست یعنی صدیق ہوتا ہے تو مشکل میں اس کے کام بھی آتا ہے۔ اسی طرح سے وہ اپنی حقیقت یعنی صداقت کا ثبوت دیتا ہے۔ تمہارے یہ دوست تمہیں فقیر نہیں بلکہ اپنا دوست سمجھتے ہیں، لہذا تمہاری مدد کرنا اپنا فرض سمجھتے ہیں۔ امی نے پیار سے ابوذر کو سمجھایا۔

اس کے علاوہ، تمہیں چاہئے کہ اپنے والد کی شفا کے لئے کوئی منت مان لو، جیسے حضرت علی علیہ السلام اور بی بی فاطمہؑ نے امام حسن علیہ السلام اور امام حسینؑ کی بیماری سے شفا کے لئے تین دن روزے کی منت مانی تھی۔"

یہ ٹھیک ہے، لیکن میں ماہ رمضان میں نذر کے روزے رکھوں گا یا ماہ رمضان کے؟" ابوذر نے جواد کی امی سے پوچھا۔

بیٹا ماہ رمضان میں، رمضان کے واجب روزوں کے علاوہ کوئی روزہ نہیں رکھا جاسکتا، ورنہ دونوں میں سے کوئی بھی روزہ شمار نہیں ہوگا۔ لہذا آپ منت مان لو، لیکن جب ابو ٹھیک ہو جائیں گے تو عید کے بعد اپنی منت بڑھا لینا۔"

ٹھیک ہے خالہ، لیکن میں یہ پیسے بطور قرض لوں گا اور بعد میں واپس کروں گا۔" ابوذر نے کہا۔

بیٹا تمہارا نام ابوذر ہے،" جواد کی امی بولیں، "حضرت ابوذر غفاریؓ بھی بہت خود دار انسان تھے۔ خودداری اچھی چیز ہے، لیکن دوستوں کی دوستی کو رد بھی کرنا اچھی بات نہیں ہیں تم ایسا کرنا کہ بعد میں یہ رقم کسی اور کو دے دینا۔"

ہاں یہ ٹھیک ہے۔" ابوذر نے کہا اور جواد کی امی کا شکریہ ادا کر کے چلا گیا۔



صدقہ

کرنا۔" امی نے جواد سے کہا۔
لیکن امی، اصل مسئلہ یہ ہے کہ وہ لوگ بہت غریب ہیں۔ وہ
اپنے ابو کا علاج کس طرح کروائیں گے؟" جواد نے پریشانی سے کہا۔
تو کیا ہوا، تم اپنے اسکول کے دوستوں کے ساتھ مل کر ان کی
مدد کرو۔" امی نے رائے دی۔

لیکن امی وہ بہت خوددار انسان ہے۔ ہم لوگوں نے پچھلے
سال اس کی مدد کرنا چاہی تھی۔ لیکن اس نے صاف انکار کر دیا تھا اور
کہا تھا کہ میں صدقہ نہیں لے سکتا۔" جواد نے امی کو بتایا۔
اچھا تم تو اسکول سے نماز پڑھ کر آئے ہو، ابھی کھانا کھا کر سو
جاؤ، شام کو اسے فون کر کے بلا لینا، پھر ہم کچھ کریں گے۔ ابھی میں
نماز پڑھنے جا رہی ہوں۔" امی نے کھانا نکال کر جواد کے سامنے

جواد اسکول سے گھر آیا تو کافی اداس لگ رہا تھا۔ اس نے
امی کو سلام کیا، جوتے اپنی جگہ اتار کر اپنا بیگ الماری میں رکھا اور
منہ ہاتھ دھونے چلا گیا۔
کیا ہوا جواد؟ آج تم کچھ اداس لگ رہے ہو؟" جواد منہ
ہاتھ دھو کر آیا تو امی نے پوچھا۔

امی، آج ابو ذر اسکول نہیں آیا تھا۔ ہم سب دوست اس
کو بہت یاد کر رہے تھے۔" جواد نے بتایا۔
تو اس میں پریشانی کی کیا بات ہے؟" امی نے پوچھا۔ وہ
جانتی تھیں کہ ابو ذر کے ساتھ جواد کی بہت اچھی دوستی ہے۔
اصل میں اس کے والد بہت سخت بیمار ہیں۔" جواد نے بتایا۔
تم اس کے سچے دوست ہو، اس لئے تم ان کے لئے ضرور دعا



ہیں؟ بھینی سوچ سوچ کر رونے لگی۔ پھر اس نے خود کو سنبھالا اور دیوار کا سہارا لیتے ہوئے کپڑے سے نیچے اتر آئی۔ پھر اس نے اندازے سے ایک طرف سفر کرنا شروع کر دیا۔ وہ بہت دیر تک راستہ تلاش کرتی رہی۔ اب تو تھکاوٹ اور بھوک سے اس کو برا حال ہو چکا تھا۔

کچھ دیر بعد دائیں جانب سے اسے ایک کی خوشبو آنے لگی۔ یہ خوشبو سردار چیونٹی کے گودام سے آرہی تھی۔ بھینی اسی سمت چلنے لگی۔ گھر پہنچ کر اس نے سب سے پہلے سردار چیونٹی سے معافی مانگی جو بظاہر تو بہت غصے میں تھی لیکن اس کی غیر موجودگی سے بے حد پریشان بھی۔

میرے پیارے بچو! اس دن ہماری بھوری چیونٹی، بھینی کو اچھی طرح معلوم ہو گیا تھا کہ لالچ بہت بری چیز ہے۔ اب وہ ہمیشہ سیدھی سیدھی قطار میں چلتی رہتی ہے اور چاہے بند مکھن کے ٹکڑے ہوں یا شکر کے سفید چمکدار ذرے، وہ کبھی اپنی سہیلیوں سے الگ ہو کر کوئی چیز کھانے کی کوشش نہیں کرتی۔

بڑھا اور ایک کے سارے ٹکڑے تمام چیونٹیوں نے اپنی اپنی کمر پر رکھ لیے۔

لیکن یہ کیا! ”جلدی کرو! لگتا ہے خانسا ماں صفائی کرنے آرہا ہے۔“ اچانک جاسوس نبی کی آواز سب کے کانوں سے ٹکرائی۔ اس کے ساتھ ہی سب چیونٹیاں سردار کی قیادت میں جلدی جلدی گھر کی جانب روانہ ہونے لگیں۔

شیلف کی دوسری جانب بالکل آخری کنارے پر کھڑی ہماری ننھی بھینی کریم کھانے میں اتنی مصروف تھی کہ اسے نبی کی آواز بالکل نہ آسکی نہ ہی بہت دیر تک اسے پتہ چل سکا کہ اس کا سارا قافلہ گھر جا چکا ہے۔

جب وہ پیٹ بھر مزیدار کریم کھا چکی تو اچانک خانسا ماں نے زرد کپڑے سے وہ شیلف بھی صاف کر ڈالا۔ بھینی کو سمجھ نہیں آئی یہ کیا ہوا۔ جب اس کو ہوش آیا تو وہ زرد کپڑے پر چپکی ہوئی تھی۔

یہ کون سی جگہ ہے یہ میں کہاں ہوں! میری سہیلیاں کہاں



www.hudamags.com

visit us: www.hudamags.com

ہدی مشن
WWW.HUDAMAGS.COM

قرآن مجید | اہل بیت | اسلام | مسائل | سوال و جواب | قبل مگزین | اخبار | تصاویر | ویڈیو | رسائل | ام سے رابطہ

اللہ رب العالمین

مقالات

حضرت زین العابدین (ع) کے یوم شہادت کی مناسبت سے۔
— عروج، عدا، تطویر نفس اور مابین اصلاح کا —
— دانشوران سے ریاض تک طاقت کی جنگ / مکہ اور —
— حدیث غدیر کے بارے میں علماء اہلسنت کے ا —
— روز عاشورہ امام حسین علیہ السلام کا پہلا —

گزشتہ مطالب

قرآن | گزشتہ اہل بیت | ویڈیو | مگزین | آڈیو | فوٹو گیلری

جواب

عاشورہ

کیون عاشور کا روزہ اہل تشیع کے نزدیک مکروہ جبکہ اہل۔

تازہ مطالب

کیون عاشور کا روزہ اہل تشیع کے نزدیک مکروہ جبکہ اہل۔
— امام حسین علیہ السلام کی شہادت کا بیان مقلد ۱ —

22

اہل بیت

عاشورہ

کیون عاشور کا روزہ اہل تشیع کے نزدیک مکروہ جبکہ اہل۔

تازہ مطالب

کیون عاشور کا روزہ اہل تشیع کے نزدیک مکروہ جبکہ اہل۔
— امام حسین علیہ السلام کی شہادت کا بیان مقلد ۱ —



لالج کی سزا

ایک کے ٹکڑوں کے پاس پہنچ کر سردار نینی نے بتایا کہ پہلے دستے کی چیونٹیاں کیک کے مزید ننھے ننھے ٹکڑے کریں گی جبکہ دوسرا دستہ سرخ پلیٹ کی اوٹ میں کھڑا رہے گا۔ جب ٹکڑے ہو جائیں تو پہلا دستہ آکر ان کو اٹھائے گا اور گھر لے جائے گا۔

بھینی دوسرے دستے میں شامل تھی۔ اس کا بس نہیں چلتا تھا کہ کیک کے بہت سے مزید ٹکڑے جلدی جلدی کھا جائے لیکن سردار چیونٹی کا اصول تھا مشن کے دوران صرف کام پر دھیان ہونا چاہیے۔

اچانک اس کی نظر شیلف کے کنارے لگی ہوئی سفید سفید میٹھی کریم پر پڑی۔ اس کے منہ میں تو پانی بھر آیا۔ پہلے اس نے ادھر ادھر دیکھا۔ اس کی سب ساتھی چیونٹیاں گروہ بنا کر باتیں کر رہی تھیں۔ بھینی کی طرف کوئی متوجہ نہیں تھا۔ بھینی نے چپکے سے قدم بڑھائے اور سفید کریم کی جانب روانہ ہو گئی۔

ادھر جب کیک کے مزید ٹکڑے ہو گئے تو سردار چیونٹی نے دوسرے دستے کو اشارہ کیا۔ دوسرا دستہ تیزی سے آگے

بچو! ایک تھی چیونٹی۔ رنگ اس کا بھورا سا تھا باقی سیاہ چیونٹیوں سے بالکل مختلف!

جس کی وجہ سے اس کی سہیلیاں اسے بھینی کہتی تھیں۔ بھینی کو، اپنی سہیلیوں کی طرح قطار میں چلنا بالکل پسند نہیں تھا۔ جب بھی اس کی ساتھی چیونٹیاں ایک لمبی سیدھی سپاٹ قطار میں چل رہی ہوتیں، بھینی کبھی دائیں چلنے لگتی کبھی بائیں اور کبھی تو رک کر کچن سے آتی ہوئی مزیدار کھانوں کی خوشبوؤں کا مزہ لینے لگتی۔ اس کا دل کرتا فوراً کچن میں جا کر مزے مزے کے کھانے کھانے لگے۔ سردار چیونٹی، نینی نے اس کو کتنا ہی سمجھایا اور ایک بار تو باقاعدہ سزا بھی دی لیکن بھوری چیونٹی کی عادت نہ بدل سکی۔

خیر! ایک دن جب جاسوس چیونٹی، جینی نے آکر بتایا کہ کچن میں شیلف پر مزیدار کیک کے چند ٹکڑے گرے پڑے ہیں۔ تو سردار سببی نے فوراً پلان ترتیب دے دیا۔ پھر کیا تھا! ننھی ننھی چیونٹیوں کے دودستوں پر مشتمل قافلہ اپنے مشن پر روانہ ہو گیا۔

صَلِّ عَلَى نَبِيِّ فَاطِمَةَ الْمُعْصُومَةِ



کچھ علمی سوالوں کے جوابات حاصل کرنے کے لئے مدینہ منورہ پہنچا۔ اس وقت آپ سفر پر تھے اس لئے اس گروہ کے افراد نے اپنے سوالات لکھ کر آپ کے گھر دے دئے اور یہ کہہ گئے کہ واپسی پر جوابات لے لیں گے۔ وہ لوگ واپس جاتے وقت حضرت امام موسیٰ کاظم (ع) کے گھر گئے تو دیکھا حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا نے ان تمام سوالات کے جواب لکھ دیئے تھے، جب کہ اس وقت آپ کمسن تھیں، وہ لوگ اپنے سوالات کے جواب پا کر بہت خوش ہوئے اور اپنے وطن واپس چل پڑے، راستے میں حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام سے ملاقات ہوئی تو پورا واقعہ آپ کو سنایا، امام علیہ السلام نے ان سے وہ جوابات مانگے، جب آپ نے دیکھا کہ حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا نے تمام سوالات کے جواب صحیح لکھے ہیں تو آپ نے فرمایا: فداھا ابوھا! اُس کا باپ اُس پر قربان ہو! یہ واقعہ حضرت معصومہ قم کی کے علم کی ایک واضح دلیل ہے۔

ایک اور روایت میں ہے کہ آپ نے فرمایا: بہت جلد قم میں میری اولاد میں سے ایک خاتون دفن ہوگی جس کا نام فاطمہ ہے اور جو اس کی قبر کی زیارت کرے گا اس پر جنت واجب ہوگی۔ اس طرح کی احادیث و روایات حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا کے عظیم مقام و مرتبہ کا بہترین ثبوت ہیں۔

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام کی زبان سے زائر حضرت معصومہ کے لئے جنت کی خبر اور وہ بھی واجب ہونے کی حد تک، بڑی اہمیت کی بات ہے۔

حضرت امام رضا علیہ السلام کو چھوڑ کر، حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام کی اولاد میں حضرت معصومہ ہی وہ ہستی ہیں جن کی فضیلت کے بارے میں ائمہ معصومین علیہم السلام کی روایات ملتی ہیں۔

آئیے آپ کو حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا کے علمی مقام سے متعلق ایک واقعہ سناتے ہیں۔ ایک دن شیعیان اہل بیت علیہم السلام کا ایک گروہ حضرت امام موسیٰ کاظم سے



حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا

ابو الفضل العباس علیہ السلام۔

آپ کی عظمت و فضیلت کا اندازہ اس سے لگ سکتے ہیں کہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام نے آپ کے والد گرامی حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام کی ولادت سے پہلے ہی آپ کی زیارت کی فضیلت بیان فرمائی تھی۔

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام نے اپنے ایک صحابی سے حضرت امام موسیٰ بن جعفر علیہ السلام کی طرف بچپن میں اشارہ کرتے ہوئے فرمایا: یہ میرا بیٹا موسیٰ ہے، خداوندِ عالم اس سے مجھے ایک بیٹی عطا کرے گا جس کا نام فاطمہ ہوگا۔ وہ قم کی سرزمین میں دفن ہو جائے گی اور جس نے قم میں اس کی زیارت کی، اس پر جنت واجب ہوگی۔

پیارے بچو! آج ہم آپ کو معصومہ قم کے بارے میں بتاتے ہیں۔ حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا فرزندِ رسول حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام کی بیٹی اور حضرت امام رضا علیہ السلام کی بہن ہیں۔ آپ کا اصلی نام فاطمہ ہے۔ اور آپ "معصومہ" قم کے نام سے مشہور ہیں۔

حضرت فاطمہ معصومہ پہلی ذی القعدہ ۱۷۳ھ ق کو مدینہ منورہ میں پیدا ہوئیں، اور ۱۰ ربیع الثانی ۲۰۱ ہجری کو وفات پا گئیں۔

حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا اہل بیت رسول کی ان ہستیوں میں سے ہیں جو ایک عظیم شخصیت کی مالک تھیں جیسے حضرت زینب کبریٰ سلام اللہ علیہا اور حضرت

دیر بات کرنے کے بعد زکریا سے فرمایا: کہ اگر میرے لائق کوئی کام ہے تو بتاؤ۔

زکریا نے کہا: میرے رشتہ دار عیسائی ہیں یہاں تک کہ میرے ماں باپ بھی۔ میری ماں بوڑھی بھی ہے اور نابینا بھی۔ "زکریا نے بتانا شروع کیا" میں اپنے والدین کے ساتھ رہتا ہوں اور انہی کے ساتھ کھاتا پیتا ہوں۔ اب آپ بتائیں مجھے کیا کرنا چاہیئے؟"

امام علیہ السلام نے زکریا سے پوچھا کہ "تمہارے ماں باپ کیا کھاتے ہیں؟" کیا وہ سور کا گوشت کھاتے ہیں؟ زکریا نے ادب جواب دیا: وہ سور کا گوشت نہیں کھاتے بلکہ عام لوگوں کی طرح حلال گوشت، سبزی، روٹی اور اسی طرح کی دوسری چیزیں کھاتے ہیں۔"

امام جعفر صادق علیہ السلام نے فرمایا "ان کے ساتھ زندگی گزارنے میں کوئی حرج نہیں ہے۔ کوشش کرو کہ اپنے ماں باپ کے ساتھ اچھی طرح پیش آؤ۔ جب تک زندہ ہیں ان کا خیال رکھو۔ پہلے سے بھی زیادہ۔"

زکریا نے امام علیہ السلام کا شکریہ ادا کیا اور حج کے لئے روانہ ہو گیا۔ حج انجام دینے کے بعد وہ اپنے والدین کے پاس اپنے گھر چلا گیا۔ وہ امام علیہ السلام کے حکم کے مطابق اپنے والدین کے ساتھ بہت محبت سے پیش آتا اور تمام کاموں میں ان کی مدد کرتا۔ اسی طرح کچھ دن گزر گئے۔ ایک دن زکریا کی ماں نے تعجب کے ساتھ اس سے پوچھا: "بیٹا! ان دنوں تم مجھ سے کچھ زیادہ ہی محبت

کرنے لگے ہو۔ تمہارا برتاؤ میرے ساتھ بہت اچھا ہو گیا ہے! کیا کوئی خاص بات ہو گئی ہے؟"

جی ہاں ماں! "زکریا نے جواب دیا۔" میں حج کرنے کے لئے گیا تو راستے میں مدینہ بھی گیا تھا۔ وہاں پیغمبر اسلام کے ایک بیٹے رہتے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے کہا کہ آپ کے ساتھ اور بابا کے ساتھ پہلے سے بھی زیادہ اچھا سلوک کروں اور آپ لوگوں کا زیادہ خیال رکھوں۔" یہ سن کر بوڑھی عورت کی آنکھوں میں آنسو آ گئے اور بولی "بیٹا! تم نے کتنا اچھا دین چنا ہے! جس دین کے پیغمبر کا بیٹا ایسی باتیں کہے، یقیناً اس کے پیغمبر کی باتیں بھی ہدایت دینے والی ہوں گی۔"

مجھے بھی اپنے دین کے بارے میں بتاؤ۔"

زکریا اپنی ماں کے پاس بیٹھ گیا اور اسے اسلام اور اس کے احکام کے بارے میں جو کچھ وہ خود جانتا تھا، بتانے لگا۔ زکریا کی باتیں سن کر اس کی ماں کا چہرہ کھلتا جا رہا تھا۔ جب زکریا خاموش ہوا تو اس کی بوڑھی ماں بولی "یہ کتنا اچھا دین ہے! میں بھی مسلمان ہونا چاہتی ہوں۔"

اس کے بعد وہ مسلمان ہو گئی اور اسلامی اخلاق، کردار اور افکار کے بارے میں معلومات حاصل کی اور جس حد تک ہوسکا اسلام کے احکام پر عمل کرنے لگی۔

زکریا بہت خوش تھا کہ اس کی بوڑھی ماں بھی اب مسلمان ہو چکی تھی اور وہ بھی خدا اور اس کے رسول کے حکم پر عمل کرنے لگی تھی۔



بہترین درس

امام علیہ السلام نے اسے سلام کیا اور مہمان خانے میں لے گئے۔

زکریا امام کے ساتھ مہمان خانہ میں داخل ہو گیا تو امام علیہ السلام نے اسے ایک مناسب جگہ پر بیٹھنے کا اشارہ کیا اور اس کے بعد خود بھی بیٹھ گئے۔ زکریا نے کہنا شروع کیا: اے فرزند رسول! میں چند ماہ قبل عیسائی تھا لیکن اب مسلمان ہو چکا ہوں اور حج کرنے کے لئے جا رہا ہوں۔ راستے میں آپ سے ملاقات کے لئے مدینہ چلا آیا۔" یہ سن کر امام علیہ السلام بہت خوش ہوئے اور کچھ

ایک دن زکریا نام کا ایک نوجوان مدینہ آیا۔ وہ شہر کے گلی کوچوں میں امام جعفر صادق علیہ السلام کے گھر کا پتہ پوچھتا ہوا امام کے گھر جا پہنچا۔ زکریا نے دروازہ کھٹکھٹایا۔ کچھ دیر بعد دروازہ کھلا اور وہ اندر چلا گیا۔ امام صادق علیہ السلام ایک کمرے میں بیٹھے ہوئے تھے۔ وہ مہمان کو آتے ہوئے دیکھ کر اپنی جگہ سے کھڑے ہو گئے اور صحن تک آکر مہمان کا استقبال کیا۔ امام علیہ السلام زکریا کو دیکھتے ہی سمجھ گئے تھے کہ وہ ایک مسافر ہے اور بہت دور سے آیا ہے۔

نہ ہو؟ اسکے لئے لمبی چوڑی دعوت کی ضرورت نہیں ہوتی ہے۔
 اسی لئے حدیث میں ہے کہ اچانک آنے والے مہمان کو بوجھ
 نہیں سمجھنا چاہیے بلکہ جو کچھ ممکن ہو سکے اسکے سامنے پیش کر دینا
 چاہیے۔ (البتہ یہ دھیان رہے کہ اگر ہم خود کسی کو دعوت دیں تو
 اپنے امکان بھر اسکی اچھی میزبانی کرنا ہماری ذمہ داری ہے)
 بھلا ایک روٹی سے کیا ہوتا ہے؟

جی ہاں شاید ہماری اور آپکی نظر میں اسکی کوئی قدر و قیمت
 نہ ہو مگر رزق پیدا کرنے والے پروردگار کے یہاں اسکی قدرو
 قیمت ہماری سوچ سے بلند ہے۔ اس لئے وہ دسترخوان اور ٹیبل
 پر سبھی ہوی ڈشوں اور طرح طرح کے کھانوں کو نہیں دیکھتا بلکہ
 اسکے یہاں معیار یہ ہے کہ اس عمل میں کتنا خلوص پایا جاتا ہے؟
 آئیے دیکھتے ہیں کہ خداوند عالم نے اپنے نیک بندوں کو
 کیا کیا عطا فرمایا ہے اور اس دنیا کی نعمتوں کے مقابلہ میں ان
 کے اندر کیا خوبیاں پائی جاتی ہیں:

- 1- بہترین کا فوری شربت (سوفٹ ڈرنک)
- 2- قیامت کی سختی سے نجات
- 3- خوشی اور مسکراہٹ کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی ملاقات
- 4- جنت
- 5- جنت کا ریشم
- 6- ٹیک لگانے کے لئے جنتی صوفے
- 7- جنت کا اے، سی۔ نہ گرمی نہ سردی
- 8- بہترین سایہ
- 9- ہر طرح کے پھل اور میوے ان کے اختیار میں ہونگے
- 10- بہت زیادہ پھل

- 11- جو موسمی اور فصلی نہ ہونگے
- 12- انھیں استعمال کرنے میں کوئی رکاوٹ نہ ہوگی۔
- 13- ہر خواہشوں کے لئے جنت کی نعمت حاضر ہوگی
- 14- اہل جنت کو انتخاب کا حق ہوگا
- 15- ان کے لئے کوئی آفت، خرابی نہیں ہوگی
- 16- ان کو آسانی سے حاصل کیا جاسکے گا
- 17- خدمت کرنے والے ہر نعمت کو لا کر پیش کریں گے
- 18- جنت کے خدام خوبصورت ہیں، وہ کبھی بوڑھے نہ
 ہونگے
- 19- چاندی کے پیالے
- 20- شیشے کے ساغروں (جام) کا دور ہوگا
- 21- ان ساغروں کا سائز اپنے اعتبار سے تبدیل کیا جاسکے گا
- 22- ہر لحاظ سے وہ ایک بڑا ملک نظر آئے گا
- 23- ان کے دلوں میں ایک دوسرے کا کینہ اور حسد نہ ہوگا۔
- 24- ان کی نیک آل و اولاد بھی ان کے ساتھ رہے گی۔
- 25- انبیاء اور اولیاء کے پڑوسی ہونگے
- 26- جنت کے خادموں کا لباس ریشمی ہوگا
- 27- ریشم کا رنگ ہر اہوگا
- 28- ہاتھوں میں چاندی کے کنگن
 یہ سب کیوں ہے؟
 ایک تھوڑے سے مگر مخلصانہ عمل کا انعام
 اور اس انعام دیتے وقت ان پر کوئی احسان نہیں جتایا
 جائے گا بلکہ ان کی کوشش کا شکریہ ادا کیا جائے گا۔
 پروردگار سب مومنین کو یہ نعمتیں عطا فرمائے۔ آمین

ترجمہ:

اور انہیں ان کے صبر کے عوض جنت اور حریر جنت عطا کرے گا (12) جہاں وہ تختوں پر تکیہ لگائے بیٹھے ہوں گے نہ آفتاب کی گرمی دیکھیں گے اور نہ سردی (13) ان کے سروں پر قریب ترین سایہ ہوگا اور میوے بالکل ان کے اختیار میں کر دیئے جائیں گے (14) ان کے گرد چاندی کے پیالے اور شیشے کے ساغروں کی گردش ہوگی (15) یہ ساغر بھی چاندی ہی کے ہوں گے جنہیں یہ لوگ اپنے پیانہ کے مطابق بنالیں گے (16) یہ وہاں ایسے پیالے سے سیراب کئے جائیں گے جس میں زنجیل کی آمیزش ہوگی (17) جو جنت کا ایک چشمہ ہے جسے سلسیل کہا جاتا ہے (18) اور ان کے گرد ہمیشہ نوجوان رہنے والے بچے گردش کر رہے ہوں گے کہ تم انہیں دیکھو گے تو بکھرے ہوئے موتی معلوم ہوں گے (19) اور پھر دوبارہ دیکھو گے تو نعمتیں اور ایک ملک کبیر نظر آئے گا (20) ان کے اوپر کریب کے سبز لباس اور ریشم کے حلے ہوں گے اور انہیں چاندی کے کنگن پہنائے جائیں گے اور انہیں ان کا پروردگار پاکیزہ شراب سے سیراب کرے گا (21) یہ سب تمہاری جزا ہے اور تمہاری سعی قابل قبول ہے (22)

تفسیر:

قیامت کے دردناک عذاب سے بچنے کے لئے غریب بھوکے کا پیٹ بھرنا کافی ہے اور جو شخص خلوص کے ساتھ یہ کام انجام دے گا پروردگار روز قیامت اسے سارے عذاب سے بچالے گا۔ اس آیت سے یہ بھی واضح ہو جاتا ہے کہ کسی بھوکے کی بھوک مٹانا اصل کام ہے چاہے وہ ایک روٹی کے ذریعہ ہی کیوں

تفسیر قرآن

سورہ انسان (۲۱)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَخَرِيرًا ﴿۱۲﴾ مُتَّكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَعْنَابِ لَا تَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿۱۳﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿۱۴﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ﴿۱۵﴾ قَوَارِيرٌ مِّن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿۱۶﴾ وَيَسْقُونَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ﴿۱۷﴾ غَنِينًا فِيهَا تَسْمَىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿۱۸﴾ وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنشُورًا ﴿۱۹﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثُمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿۲۰﴾ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سَنَدُسٍ خُضْرٍ وَإِسْتَبْرَقٌ وَخُلُوعًا أَسَاوِرٌ مِّن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿۲۱﴾ إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ﴿۲۲﴾

اَللّٰهُمَّ عَلَيْكُمْ



فہرست

- (۱) تفسیر
- (۲) بہترین درس
- (۳) حضرت معصومہ
- (۴) لالچ کی سزا
- (۵) صدقہ
- (۶) جنت میں درخت
- (۷) ڈائری
- (۸) لطیفے

جو لوگ ایمان لائے اور انھوں نے نیک اعمال کئے ان کے لئے "طوبی" (بہشت) اور بہترین پارکشت ہے



جلد-۷، شمارہ-۸ جولائی ۲۰۱۷ء

یادگار:

خادم دین و ملت مولانا محمد علی آصف طبہ شاہ

مجلس ادارت:

مولانا تصدیق حسین صاحب مولانا سعید الحسن صاحب مولانا کمیل اصغر صاحب

مدیر:

سید منظر صادق زیدی

نائب مدیر: سید محمد سبطین باقری



ترنین و آرائش: imagine
9839099435

سالانہ زراعت: ۳۰۰ روپے

ناشر: ہدی مشن

موضع غازی پور، ڈاکخانہ گولوان، ضلع مظفرنگر

یو پی انڈیا ۲۰۷۷۷۳، فون: 09890500072, 09927754886

برائچ آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی مفتی گنج، لکھنؤ-۲

Mob.: 09415090034, 09451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

ماہنامہ ۹
طوبیٰ

جولائی ۱۴۰۲ء

ماہنامہ